रजत जयंती
सी डैक
CDAC
1988 SILVER JUBILEE 2013

सूत्रपात

तृतीय गृह पत्रिका

प्रगत संगणन विकास केन्द्र, मोहाली

सूत्रपात

(वार्षिक गृह पत्रिका–तृतीय अंक)

इस अंक में

कार्यकारी निदेशक की कलम से

श्री जगजीत सिंह भाटिया

कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष
(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

दीपक राणा

प्रशासनिक एवं हिन्दी अधिकारी

सम्पादक मण्डल

सुनीत खेतरपाल, शैलेश सिंह, अनु आहुजा

सहयोग

सुषमा कौशल, प्रीतिका खेरा

निःशुल्क वितरण के लिए

नोटः– प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात संपादक मंडल की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने है सम्पादक मंडल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गृह पत्रिका–तृतीय अंक

अनुक्रम

अंक (क)

संदेश — कार्यकारी निदेशक की कलम से

सम्पादकीय

संविधन के राजभाषा

अंक (ख)

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	तकनीकी लेख	
1	एनिमेशन–एक तेज़ी से उभरता क्षेत्र	1
2	वेतार संवेदक तंत्र	5
	काव्य शास्त्रा	
3	वक्त नहीं	6
4	गुरूदतः कम्पयूटर के संदर्भ में	7
5	उम्मीद की किरण	8
6	वक्त गुजरता रहता है	9
7	गम का फसाना	10
8	बचपन का सफर	11
	लेख	
9	खूनदान सर्वश्रेष्ठ, महादान	12
10	भारतीय महिला उद्यमशीलता	14
11	कर्म काण्ड, रूहानी ज्ञान और श्री गुरू नानक देव	15
12	जीवनोपयोगी अनमोल बातें	18
	हास्य व्यंग्य	
13	पत्नी की आरती	19
14	असमानता के मंडराते बादल	20
15	थोड़ा हंस ले	21
	निबन्ध	
16	सुबह की सैर	22
17	पर्यावरण	23
18	पुस्तकालय का महत्व	24
19	नौजवान पीढ़ी में नशे की प्रवृति	25
20	प्रशासनिक शब्दावली	26

संविधान में राजभाषा

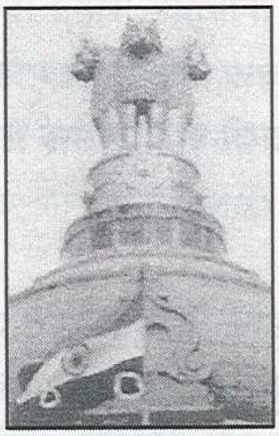

भारत का संविधान

भाग—१७

राजभाषा

अध्याय १— संघ की भाषा

✡ अनुच्छेद ✡

३४३ संघ की राजभाषा ।

३४४ राजभाषा के सम्बन्ध में आयोग और ससंद की समिति ।

३४५ राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं ।

३४६ एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा ।

३४७ किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध ।

३४८ उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा ।

३४९ भाषा से सम्बन्धित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया ।

३५० व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा ।

३५१ हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश ।

कार्यकारी निदेशक की कलम से

सी–डैक मोहाली, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार की एक वैज्ञानिक संस्था है। इसकी स्थापना मई सन् 1989 में हुई थी।

पिछले 24 वर्षो से सी–डैक मोहाली ने अनुसंधान एवं विकास प्रणाली में जनशक्ति तैयार करने में अपार विशेषज्ञता प्राप्त की है। इस केन्द्र ने अपने महत्वपूर्ण अनुसंधान एवं विकास क्षेत्रों में कई परियोजनाएं और उत्पाद बनाए हैं जैसे कि बहुभाषी संगणन, सोफ्टवेयर प्रौद्योगिकी, व्यवसायिक इलैक्ट्रोनिक्स, साईबर सुरक्षा इत्यादि । यह केन्द्र स्वास्थ्य सूचना विज्ञान से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण गतिविधियों पर भी कार्य कर रहा है।

केन्द्र में राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए समय–समय पर कई प्रयास होते रहते है। अपने संस्थान की गृह पत्रिका 'सूत्रपात' का तृतीय अंक के माध्यम से आप सबको सम्बोधित करते हुए मैं गर्व और हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ । इस तृतीय अंक को प्रकाशित करने के लिए हमारे सी–डैक परिवार का सामूहिक प्रयास है।

धन्यवाद सहित

जगजीत सिंह भाटीया

सम्पादकीय

जैसे हम सब जानते हैं कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, और इसकी छवि में और निखार तब आया जब इसको राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। इस सूचना प्रौद्योगिकी युग में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में भले ही कुछ कठिनाईयां आ रही हैं, परन्तु फिर भी इसके पाठकों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

प्रिंट और इलैक्ट्रोनिक्स मीडिया द्वारा हिन्दी भाषा का दिन प्रतिदिन बढ़ता प्रभाव देखा जा सकता है। आने वाले समय की मांग है कि इस भाषा का विकास राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिये। इसी बात को मध्य नजर रखते हुये सी–डैक मोहाली इस क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियां करता रहता है, और सूत्रपात का प्रकाशन इसका एक उदाहरण है।

सूत्रपात के तृतीय अंक के प्रकाशन करने वाले सभी सहयोगियों का मैं हार्दिक अभारी हूँ।

हार्दिक अभिनन्दन सहित

दीपक राणा
प्रशासनिक एवं हिन्दी अधिकारी

प्रगत संगणक विकास केन्द्र, मोहाली

प्रगत संगणक विकास केन्द्र सी–डैक ;पूर्वक इलैक्ट्रोनिकी डिज़ाईन प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना मई 1989 में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई।

सी–डैक, मोहाली सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग का आई.एस.ओ. प्रमाणित पहला केन्द्र है। यह केन्द्र दूरसंचार, नेटवर्किंग, बहुभाषी, मल्टीमीडिया, बायोमेडिकल, साइबर सिक्योरिटी तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण देने की क्षमता रखता है। इन सभी प्रशिक्षणों के पाठ्य–क्रम आई.टी. क्षेत्र की जरूरतों को मध्य नज़र रखते हुए समय–समय पर विकसित किए जाते हैं। पिछले दो दशकों से यह केन्द्र मानव प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपनी विश्वस्तरीय छवि कायम कर रखी है। यह केन्द्र अब तक 3500 पाठ्यक्रमों में लगभग 40000 से ज्यादा भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को आधुनिक प्रशिक्षण देकर उनका व्यवसायिक विकास कर चुका है।

सी–डैक, मोहाली विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक सोफ्टवेयर उत्पाद बना चुका है, जिनमें स्वास्थ्य देखभाल के लिए संजीवनी और ई–संजीवनी, भारत सोफ्टवेयर सल्यूशन जिसे स्कूल, कॉलेज तथा अन्य संस्थानों की कुशल कार्यवाही के लिए, हनीनेट सोफ्टवेयर साईबर सुरक्षा के लिए आर.एफ.डी. आई. आधारित प्रणाली विभिन्न विभागों के लिए और इसी तरह के अनेक सोफ्टवेयर प्रदान कर चुका है जो कि पंजाब सरकार तथा अन्य राज्य सरकारों के लिए अत्यन्त लाभकारी साबित हो चुके है ।

सी–डैक, मोहाली में मानव संसाधन के विकास के लिए आई.टी क्षेत्र में जरूरत मंद सभी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध है जिसमें स्मार्ट कक्षाएं, ऐनिमेशन और मल्टीमीडिया प्रयोगशाला, बहुभाषी प्रयोगशाला, साइबर सुरक्षा प्रयोगशाला, डिजिटल इलैक्ट्रोनिक प्रयोगशाला, प्रोटोटाईप विकास प्रयोगशाला तथा कई अन्य प्रयोगशालाएं भी आई.टी. की पूर्ण जरूरतों के आधार पर उपलब्ध हैं। केन्द्र के पुस्तकालय में आई.टी. सम्बन्धित 8500 से ज्यादा पुस्तकें और 45 से ज्यादा पत्रिकाएं देखी जा सकती है। पुस्तकालय में 100 से ज्यादा व्यक्तियों के बैठने की क्षमता , आधुनिक सुविधाओं से युक्त और लड़के लड़कियों के लिए अलग–अलग छात्रावास जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ सी–डैक मोहाली ने अपना राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर को बनाए रखा है।

एनिमेशन – एक तेज़ी से उभरता क्षेत्र

एनिमेशन उद्योग ने दुनिया में तहलका मचा दिया है। एनिमेशन आईसीटी का एक ऐसा क्षेत्र है जोकि बहुत ही रोमांचक है और तेज़ी से बढ़ रहा है। तीव्र गति से बदलती तस्वीरों से उनके अन्दर बनी आकृतियों के हिलने का अनुभव पैदा करना एनिमेशन की नींव है। किसी भी चीज़ को आसानी से समझने के लिए अथवा उसको और आकर्षित बनाने के लिए एनिमेशन का इस्तेमाल किया जाता है। आजकल विज्ञापन, फिल्में, कॉपरेट प्रस्तुतियां, लेक्चर, कंप्यूटर गेम आदि में एनिमेशन का बढ़चढ़ के उपयोग किया जाता है।

एनिमेशन का सौंदर्य तथ्य है कि महान सबक सीखने की प्रक्रिया पर बिना ज़ोर दिये, बहुत आसानी से उस सबक का मतलब सिखा देती है। एनिमेशन के माध्यम से हम विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, शिक्षित–अशिक्षित और अलग–अलग भाषाओं में बोलने वाली जनता तक अपना सन्देश पहुँचने में सक्षम हो सकते हैं। यह संभव है क्योंकि किसी भी प्रबल एनिमेशन को भाषा के समर्थन की जरूरत नहीं है। गैर मौखिक संचार इस में एक महान परिसंपत्ति है।

एनिमेशन बनाते समय हमें अपने दर्शकों पर विचार करना चाहिए कि वह कौन हैं, उनकी क्या उम्र है, किन वातावरणों में वह हमारी बनाई एनिमेशन को देखेंगे, आदि। यह सब जानना इसलिए जरूरी है ताकि हम उनके हालातों को मध्य–नज़र रखते हुए अपना सन्देश उन तक पहुंचा पायें या अपने उत्पाद को खरीदने के लिए उन्हें राज़ी कर पायें। एनिमेशन फिल्मों के विकास के पीछे उद्देश्य समाज के उन सामाजिक समस्याओं के बारे में भारतवासियों को उतेजित और उजागर करना है जोकि हमारी संस्कृति के विरूद्ध जा कर उन्ही संस्कारों और परम्पराओं को खत्म कर रही है जिनके लिए विश्व भर में भारत प्राचीन समय से विख्यात रहा है।

सामाजिक जागरूकता की बात करें तो कंप्यूटर एनिमेशन के द्वारा हम किसी समस्या को सुलझाने के लिए, या लोगों से बेहतर संपर्क करने के लिए इसका अच्छा इस्तेमाल कर सकते हैं। नशीली दवाओं के दुरूपयोग, वैवाहिक विवाद, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, बालिका शिक्षा, अधिक मदिरा पीने से उत्पन्न रोग आदि, कुछ ऐसे गंभीर मुद्दे हैं जोकि हमारे विकासशील राष्ट्र के द्वारा संबोधित किए जाने चाहिए। सामाजिक बुराईयों के प्रति जागरूकता किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक है। इस दिशा में, एक प्रयास के रूप में, सी–डैक मोहाली एनिमेशन के ज़रिये उन सामाजिक मुद्दों के बारे में भारतीय जनता में जागरूकता पैदा करने की कोशिश कर रहा है जो हमारे समाज के लोकाचार और सदभाव को प्रभावित कर रहे हैं। सी–डैक मोहाली का उद्देश्य इन मुद्दों के बारे में सामाजिक जागरूकता और इस संबध में लोगों को शिक्षित करना है ताकि वह एकजुट हो कर हमारे समाज से जुड़े कलंक को मिटा सकें।

एनिमेशन फिल्में बच्चों या निरक्षरों तक पहुँचने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, खासकर जब एक जटिल विषय को सरल शब्दों में अनुवाद कर उसे अपने दर्शकों तक पहुँचना हो। कई सर्वेक्षणों और शोधों के द्वारा सिद्ध किया गया है कि भारत में एनिमेशन एक तेज़ी से बढ़ रहा क्षेत्र है । इसका कारण यह भी है कि सभी आयु वर्ग के लोग इस संचार माध्यम से अपने को जोड़ पाते हैं । लोगों के व्यवहार और विचारों में बदलाव लाने के लिए एनिमेशन का बहुत सहयोग है क्योंकि यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है।

एनिमेशन फिल्में एड्युटेन्मेंट के एक स्रोत के रूप में काम करती हैं, जिससे कि लोगों को अपने समाज की सही तस्वीर का एहसास हो पाए, कई दशकों से चली आ रही सामाजिक समस्याओं और बुराईयों की जानकारी हो पाए ताकि लोग इनसे उठकर अपने जीवन में सकारात्मक विचारों को पनपने दें। यह करने से उनके स्वस्थ, निजी व्यावसायिक और सामाजिक जीवन में संतुलन पैदा हो पायेगा और देश निरंतर तरक्की की राह पर चल पायेगा।

एनिमेशन उद्योग नया नहीं है। गति ड्राइंग के प्रयास में प्रारंभिक उदाहरण हैं पेलेओलिथिक गुफा के चित्र, जहां पशुओं का भागना या चलना कई पैरों के साथ चित्रित किया गया है। इन चित्रों में स्पष्ट रूप से गति की धारणा व्यक्त करने का प्रयास पाया जाता है। सैन फ्रांसिस्को की आसीफा (ASIFA) के अध्यक्ष, कार्ल कोहेन के अनुसार बीसवीं सदी की शुरूआत से एनिमेशन ने वाणिज्यिक क्षेत्र में एक मज़बूत कदम रखा है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेज़ी से होती प्रगति ने एनिमेशन उद्योग को बहुत प्रोत्साहन दिया है। यह माना जाता है कि पहली दस्तावेज एनिमेशन 1899 में बनाई गई थी। यह भी आर्थर मेलबोर्न कपूर द्वारा "मैचिज़ ऐन अपील" जिसमें माचिसों की बंद गति छवियों के द्वारा इंग्लैंड में लोगों से बोअर युद्ध मे लड़ रहे सैनिकों के लिये माचिस भेजने की अपील की गई थी। विश्व प्रसिद्ध वॉल्ट डिज्नी ने 1921 में अपनी पहली एनिमेटिड फिल्म बनाई और आज तक पीछे मुड़के नहीं देखा।

एनिमेशन उद्योग में हो रही तरक्की के चलते इसकी तकनीकों में भी वृद्धि हुई है। एनिमेशन की कई तकनीकें है। इनके बारे में अधिक जानकारी नीचे दी गई है। सबसे पुरानी है विक्टोरियन युग की ज़ोयेत्रोप तकनीक यह दर्शाता है कि कैसे एनिमेशन छवियों का एक अनुक्रम है जिसे समय के साथ देखा जा सकता है। चित्र में आकारों को एक सीधी लाइन में एक कागज़ पर बनाया जाता है। हर आकार पिछले चित्र से कुछ अलग होता है फिर उस कागज़ को गोल करके ज़ोयेत्रोप मशीन में डाल दिया जाता है। इस मशीन में छोटे और लम्बे छेद होते हैं जिनमें से अन्दर का कागज दिखता है। जब इस मशीन को तेज़ी से घुमाया जाता है तो हर चित्र इस छेद में तेज़ी से निकलता है। यूँ लगता है मानो चित्र में बनाया हुआ आकार चल रहा हो। "साईकल ऑफ लाइफ" ज़ोयेत्रोप तकनीक का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

फिर है कैनेटोस्कोप तकनीक। कैनेटोस्कोप का आविष्कार थॉमस एडीसन ने किया था। जब कैनेटोस्कोप मशीन में चित्रों को छेद वाली फिल्म पर बनाके डाला जाता है और प्रकाश के उपर घुमाया जाता है तो छवियों के चलने का भ्रम होता है। यह मशीन आजकल के सिनेमाघरों में प्रयोग किए जा रहे आधुनिक फिल्म प्रक्षेपण की बुनियाद थी।

फ्लिप बुक सबसे सरल प्रकार की एनिमेशन है। इसमें कई कागज़ इस्तेमाल होते हैं। जो कि आम तौर पर लंबे और संकीर्ण होते

हैं। प्रत्येक पृष्ठ के अंत में एक चित्र बनाया जाता है, इन चित्रों को पीछे से शुरू करके आगे की ओर बनाया जाता है, क्योंकि फ्लिप बुक में छवियों के रूप को पीछे से आगे देखा जाता है प्रत्येक पृष्ठ पर बनी छवियाँ पिछली छवियों से भिन्न होती हैं ता कि जब उन कागज़ों को तीव्र गति से बढ़ाया जाये तो उन छवियों के बढ़ने का भ्रम हो ।

सेल एनिमेशन सेल्यूलाइड फिल्म पर तैयार की जाती है। सेल्यूलाइड फिल्म में कई सेल एक पंक्ति में होते हैं। प्रत्येक सेल खाली व स्पष्ट है और बाकी फिल्म काली होती है। प्रत्येक सेल में एक चित्र बनाया जाता है बाकी एनिमेशन तकनीकों की तरह इस तकनीक में भी प्रत्येक चित्र दूसरे से भिन्न होता है। जब फिल्म को तेज़ गति से प्रकाशित किया जाता है तो छवियों के चलने का भ्रम होता है। सेल एनिमेशन में आप पूरा चित्र एक ही सेल में बना सकते हैं या फिर एक अलग विधि से कई परतों में चित्र को बना कर (उदाहरण के लिए पृष्ठभूमि, वर्ण) प्रत्येक भाग को एक दूसरे के शीर्ष पर रख कर एनिमेट कर सकते हैं लेकिन यह विधि अविश्वसनीय रूप से समय लेने वाली हैं। कंप्यूटर एनिमेशन के आने से पहले यह तकनीक टीवी कार्टून और एनिमेटेड फिल्मों के लिए बहुत लोकप्रिय थी ।

रोटोस्कोपिंग में जीवित अभिनेताओं को फिल्माया जाता है और फिर उन्हें टेम्पलेट के रूप में उपयोग कर एनिमेशन तैयार की जाती है। पारंपरिक एनिमेशन उत्पादन में फिल्माई गई छवियों को सेल्यूलाइड फिल्म पर हाथ से उतारा जाता है। यह तकनीक वर्णों की गतिविधियाँ और अधिक यर्थाथवादी बना देती है। रोटोस्कोपिंग तकनीक को डिजिटल एनिमेंशन में भी प्रयोग किया जाता है। अभिनेताओं को एक कंप्यूटर से जोड़ कर उनका कंकाल बनाया जाता है। कंप्यूटर इस कंकाल पर एनिमेशन करके उसका नक्शा और चरित्र बनाता है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी में आते हुए सुधार के चलते यह प्रौद्योगिकी एनिमेशन बनाने और उन्हें देखने वालों में तेज़ी से लोकप्रिय हो गई है। इंटरनेट और कंप्यूटर गेम में इस्तेमाल होने वाली एनिमेशन डिजिटल होती है। 1995 में बनी ''टॉय स्टोरी'' सबसे प्रमुख डिजिटल एनिमेटड फिल्म मानी जाती है।

छवियों को कंप्यूटर पर बनाने या हाथ से ड्राइंग करने की बजाय कई ऐनीमेटर्ज़ कैमरा से उनकी कई तस्वीरें खींचते है। यह तस्वीरें एक दूसरे से भिन्न होती है। इनें जब तेज़ गति से देखा जाता है तो उनके हिलने का भ्रम होता है। इस तकनीक को फोटोग्राफिक स्टिल्स कहा जाता है यह तो सिर्फ तस्वीरें होती है या फिर उन तस्वीरें पर चित्र भी बना सकते हैं, जो कि एक दूसरे से भिन्न हों।

स्टॉप फ्रेम एनिमेशन वह एनिमेशन है जिसमें एक छवि या एक वास्तविक जीवन के दृश्य को कैमरे में कैद किया जाता है। इसमें या तो कई तस्वीरें खींची जाती हैं, या फिर एक वीडियो रिकॉडिंग की जाती है। जिसमें हर रिकॉडिंग एक–एक सैकिंड की होती है, जैसे कि फोटोग्राफिक स्टिल्स में होता है, प्रत्येक छवि या दृश्य पहली छवि से भिन्न होती है। और इन्हें एक अनुक्रम में तेज़ी से देखने से इनके चलने का भ्रम होता है।

क्लेमेशन स्टॉप फ्रेम एनिमेशन का एक विशेष प्रकार है क्लेमेशन में मॉडल को चीकनी मिट्टी या क्राफट क्ले से बनाया जाता है। फिर कैमरा से उस मॉडल और दृश्य की तस्वीर ली जाती है। हर तस्वीर के बाद उस मॉडल की जगह कुछ बदल दी जाती है। अंत में जब सभी

तस्वीरों को तेज़ी से एक साथ देखा जाता है तो यह प्रकट होता है कि मॉडल वास्तव में आगे बढ़ रहा है।

सामाजिक जागरूकता में एनिमेशन का बहुत बड़ा सहयोग है। अब इसकी व्यापक रूप से स्वीकृति है कि भावना की अभिव्यक्ति और व्यक्तित्व विश्वसनीय एजेंटों के प्रमुख घटक हैं। इंटरैक्टिव लर्निंग वातावरण में भी एनिमेशन का बहुत बड़ा योगदान है। अध्ययन से पता चला है कि पढ़ाई के लिये इस्तेमाल की गई कंप्यूटर एनिमेशन के उपयोग से शैक्षिक प्रदर्शन बढ़ता है।

कंप्यूटर एनिमेशन भारतीय पौराणिक कथाओं के पुनरूद्धार के लिए बहुत लाभदायक रही है। नवयुग के युवक–युविकाओं तक हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत (जैसे कि जातका, पंचतंत्र, महाभारत और रामायण) पहुँचाने के लिए कंप्यूटर एनिमेशन बहुत सहायक सिद्ध हो रही है। इतिहासिक और पौराणिक कथाओं के अलावा प्रत्येक क्षेत्र की अपनी स्थानीय लोक कथाओं का इतिहास भी महत्वपूर्ण रहा है। कृप्यूटर एनिमेशन से आज मुमकिन हो पाया है कि इन सभी को सिनेमा या टेलीविज़न के माध्यम से आम जनता तक पहुचां पाए हैं, नहीं तो शायद यह इतिहास के पन्नों में निहित दफन हो जाते और केवल कुछ इच्छुक लोगों तक ही पहुँच पाते ।

आज एनिमेशन उत्पादकों के लिए कई नए अवसर हैं ताकि वह विभिन्न क्षेत्रों में बसे विभिन्न उपयोगकर्ताओं तक आसानी से पहुँचे और अपनी क्षमता दिखा सकें। भारत में एनिमेशन क्षेत्र आजकल एक ऊची उड़ान भर रहा है फीचर फिल्म निर्माण, टीवी कार्यक्रम, विज्ञापन, खेल जगत, ऑनलाइन शिक्षा, और उद्योग विशिष्ट अनुप्रयोगों में एनिमेशन का बहुत बड़ा योगदान है।

हर चीज़ को जब तक नियमित ढंग से इस्तेमाल किया जाए तब तक वह लाभदायक रहती है, लेकिन अगर उसका दुरूपयोग किया जाये तो वह हानिकारक हो जाती है। उसी तरह जहाँ एनिमेशन के इतने फायदे हैं, वहाँ उसके कुछ नुकसान भी हैं। अनुसंधान के निष्कर्ष यह बताते हैं कि कंप्यूटर एनिमेशन का काफ़ी हद तक दोस्ती और परिवार के रिश्तों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एनिमेशन के उपयोग में वृद्धि अकेलेपन और अवसाद का कारण बनता है। अध्ययन से पता चला है कि हिंसक एनिमेटिड प्रोग्राम या कंप्यूटर गेम्ज़ खेलने से बच्चों में अक्रामकता बढ़ती है और उनका व्यवहार भी हिंसक हो सकता है। इस लिए जरूरी है कि हम हिंसक एनिमेशन को बढ़ावा न दें और एनिमेशन का इस्तेमाल सही दिशा में करें, जोकि एड्युटेन्मेंट (शिक्षा और मनोरंजन) है ।

सुनीत खेतरपाल
प्रधान तकनीकी अधिकारी

वेतार संवेदक तंत्र

वेतार संवेदक तंत्र एक उभरती हुई प्रौद्योगिकी है इसमें एक सूक्ष्म यंत्र के द्वारा संवेदन, गणना और प्रसारण की क्रिया सम्पन्न की जाती है । यह प्रौद्योगिकी, जिगबी तकनीक पर आधरित है यह 2.4 गीगा हर्ट्स पर कार्य करती है। इस प्रौद्योगिकी में बहुत सारे सूक्ष्म यंत्र जालक्षि जालक्रम द्वारा एक बड़ा संजाल बनाते हैं जिसके माध्यम से दूर तक फैले क्षेत्र से विभिन्न सूचनाओं को एकत्र करके केन्द्रीय कक्ष तक पहुंचाया जाता है जहां इन सूचनाओं का विश्लेषण किया जाता है। यह तन्त्र न्यूनतम ऊर्जा से संचालित होता है इसे सौर्य ऊर्जा से भी संचालित किया जा सकता है। इसका उपयोग वैज्ञानिक शोध कार्यो, चिकित्सा क्षेत्र, गृह स्वचालन और परिशुद्ध खेती जैसे क्षेत्रों में सफलता पूर्वक किया जा रहा है। वातावरण के बदलते आयामों पर निगरानी रखने के लिए भी इस तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है।

संयोजक, अनुमार्गक और छोर यंत्र इस प्रौद्योगिकी के मुख्य अवयव हैं। छोर यंत्र का कार्य सूचनाओं को संवेदको के माध्यम से एकत्र करके अनुमार्गक पर पहुंचाना होता है

अनुमार्गक संयोजक की सहायता से मार्ग निर्धरण करता है और छोर यंत्रो द्वारा प्रसारित सूचनाओं को संयोजक यंत्र तक पहुंचाता है।

सी–डैक मोहाली भी इस क्षेत्र में शोध कार्य कर रहा है और इस तकनीक में प्रयोग होने वाले विभिन्न उपकरणों जैसे संयोजक, अनुमार्गक और छोर यंत्रों का सफलता पूर्वक विकास कर लिया है इन उपकरणों का सघन परीक्षण चल रहा है। निकट भविष्य में इस क्षेत्र में अत्यधिक विकास होने की उम्मीद है।

शैलेश सिंह
अभियन्ता

वक्त नहीं

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं,
दिन रात घूमती दुनियां में
जिंदगी के लिए वक्त नहीं ।

मां की लोरी का एहसास तो है
पर मां को मां कहने का वक्त नहीं,
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके हैं
अब इन्हें दफनाने का भी वक्त नहीं।

सारे नाम मोबाइल में तो हैं
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं,
गैरों की क्या बात करना
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं।

आंखों में है नींद पडी
पर सोने के लिए वक्त नहीं,
दिल तो गमों से भरा हुआ
पर रोने का भी वक्त नहीं।

फेंशन की दुनिया में ऐसे डुबा हुआ है इंसान
कि थकने का भी वक्त नहीं,
पराये हसानों की क्या कदर करनी
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं।

तू ही बता जिंदगी
इस जिंदगी का क्या होगा,
कि हर पल मरने वालों को
जीने के लिए भी वक्त नहीं।

सुषमा कौशल
कार्यालय सहायक

गुरूदतः कम्पयूटर के संदर्भ में

ये डाकुमेंट, ये मीटिंग, ये फीचरस की दुनिया
ये इन्सानों की दुश्मन, करसर की दुनिया
ये डेडलाइन की भूखी मेंनेजमैंट की दुनिया
ये परोडक्ट अगर बन भी जाए तो क्या है।

यहां एक खिलोना है प्रोग्रामर की हस्ती
ये बस्ती है मुरदा बग फीकसर की बस्ती
यहां पर तो रेजिंज है, इनफ्लेशन से सस्ती
ये रिव्यू अगर हो भी जाए तो क्या है।

हर इक कीबोर्ड घायल, हर इक लोगिन प्यासी
एक्सल में उलझन, वीनबरढ में उदासी
ये ओफिस है या आलम माइक्रोसोफट की
ये रीलियस अगर हो भी जाए तो क्या है।

जला दो इसे, फूंक दो ये मॉनिटर
मेरे सामने से हटा दो ये मोडेम
तुम्हारे हैं तुम्ही संभालो ये कंप्यूटर
ये परोडक्ट अगर, चल भी जाए तो क्या है।

सुषमा कौशल
कार्यालय सहायक

"उम्मीद की किरण"

तमन्ना है पर्वतों के शिखर को छूने की
आसमां की सीमाओं को पार करने की,
समुद्र की गहराइयों को नापने की
सरहद की सीमाओं को पार करने की।

गगन से चाँद–तारे लाने की
उम्मीद की किरण है हर नामुकिन को मुमकिन करने की,
पर सपना तो सपना है हकीकत नहीं
चाहत की सीमाओं का तो कोई अंत नहीं।

जिन्दगी इम्तिहान तो लेती है
हार जीत सफलता की किरण है बाकी,
साँझ होने से पहले सूर्य की चमक है बाकी
हारा हूँ कई बार पर हिम्मत न हारी है।

खाया है धोखा पर साथ न छोड़ा है
उम्मीद की किरण है बाकी कि अपने पराए में फर्क कर पाऊँगा,
कल्पना की पंखुड़ियों को हकीकत में पिरोकर
मुश्किल में मुश्किल मुकाम हासिल कर पाऊँगा।

परमजीत सिंह
एम.एस.एस.III (मैकेनिक)

वक्त गुजरता रहता है

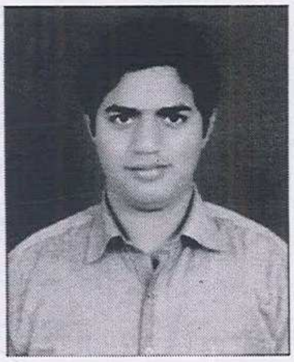

वक्त गुजरता रहता है,
थमता नहीं किसी के लिए,
और वक्त चले जाता है,
वापिस आता नहीं किसी के लिए ।

हम कितनी आस लगाये बैठे हैं,
खुशियों के आने के लिए,
एक सोच बनाए बैठे है,
पर वक्त निकल जाता है,
और हमारा अधूरा काम,
फिर से अधूरा रह जाता है ।

चलना हमारा स्वभाव है,
रूक हम सकते नहीं,
रूकेंगे तो अंधेरे में खो जायेंगे,
चलेंगे तो उजाले की और बढ़ते जायेंगे ।

बना लो इस वक्त को अपना,
यह हर पल तुम्हे हँसाएगा,
एक नई मंजिल दिखायेगा,
यह रूकता नहीं किसी के लिए,
अगर निकल गया तो,
तो फिर से एक नया दर्द दे जाएगा ।

वक्त गुजरता रहता है
थमता नहीं किसी के लिए
और वक्त चले जाता है
वापिस आता नहीं किसी के लिए ।

विवेक कुमार
परियोजना सहायक

गम का फ़साना

जब आसमान पर यदा–कदा,
काली बदली सी छाती है,
और विचारों की आंधी से
दिल की खिड़की खुल जाती है,
दस्तक देता है कोई,
इक बिजली कौंध सी जाती है,
कुछ दर्द उबलने लगते हैं,
और इक कविता बन जाती है।

जब अंधेरी उन गलियों में,
सन्नाटा पसरा होता है,
और दूर–दूर तक वादी में,
गम का कोहरा होता है,
तब स्याह उजालों में मेरी,
परछाई खो सी जाती है,
कुछ दर्द सिसकने लगते हैं,
और इक कविता बन जाती है।

जब चलता हूँ मैं दूर तलक,
और कोई साथ नहीं होता,
वादे तो काफी होते हैं,
हाथों में हाथ नहीं होता,

तब बीते उन सब लम्हों की,
याद बड़ी तड़पाती है,
कुछ जख्म बिलकने लगते हैं,
और इक कविता बन जाती है।

जब हँसते है दुनिया वाले,
मैं भी हंसकर दिखलाता हूँ,
चेहरे की उसी बनावट में,
अपने गम को झुठलाता हूँ,
जब किसी खुशी के मौके पे,
आँखें सागर छलकाती हैं,
कुछ मोती ढलने लगते हैं,
और इक कविता बन जाती है।

कुँवर सिंह
परियोजना सहयोगी

बचपन का सफर

बचपन का प्यारा और अनोखा सा सफर,
चेतना के द्वार पर देता है दस्तक अकसर,
निःशब्द कुछ लम्हें है उनकी ये दास्तान,
मासूमियत की ओट से उभरे है कुछ अरमान!
चंचल मन में प्यारी सी लिए हुए आस,
आसमान को छूने की होती है प्यास,
दुनिया के उधेड़बुन से हट कर
नन्हें सपने नन्हीं सी पलकों पर!

स्कूल की बस हो या कक्षा निवास,
मौज मस्ती का न छोड़े प्रयास,
टीचर की डांट पर निकले मगरमछ के आँसू,
पर गंभीरता के अंश की न कोई जिज्ञास् ।

टीचर की हो अनुपस्थिति या पीरियड हो खाली,
समझो आस पुरी हो गई सारी,
अवसर का पूरा फायदा उठाए जम कर,
पता नहीं कल मौका आए ना आए मुड़ कर ।

परीक्षा के दिन लगते है भारी,
जैसे भयानक सपनों से घिरी है दुनिया सारी,
कभी नींद कभी बिमारी का हो अनुभव,
भयानक जुल्मों का हो सामना असंभव ।

छुट्टियों के दिन बहुत लुभाए,
आखिरकार भगवान ने अपने जुल्म घटाए,
खेलों में फिर दिन निकले सारा,
थके हुए मस्तिष्क को खेल रूपी टौनिक का ही तो है सहारा ।

पर थम नहीं सकती ज़िदगी की रफ्तार,
गंभीरता और समझदारी होता है बढ़ती उमर का सार,
बचपन की चेतना से उभरकर
अपने कर्तव्यों को पूराकरना है डट कर ।

यहीं है एक अच्छे नागरिक की पहचान,
देश की प्रगति से जुड़ी है जिसकी आन,
बचपन के नन्हे लम्हे समेट कर,
विकास के पथ पर चलने का संकल्प कर ।

हरनीत कौर
प्रोजेक्ट कंसलटेंट

खूनदान सर्वश्रेष्ठ महादान

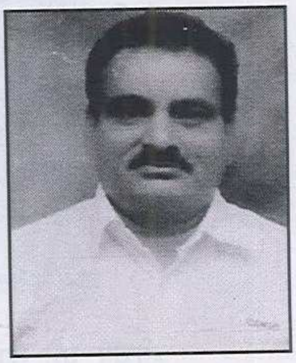

आज के समय में वैसे तो हमें बहुत से इन्सान दुनिया में ऐसे मिलते हैं जो कि यह समझते हैं कि गरीबों को दान देना, धार्मिक स्थलों पर दान देना या किसी प्रकार का दान देना उत्तम कर्म है और उनके पीर–पैगम्बर भी उन्हें यही शिक्षा देते हैं कि दान करने से जीवन में सुख, शांति और संतुष्टि मिलती है। माना सारे दान तो उत्तम हैं लेकिन रक्तदान सर्वोतम दान है क्योंकि रक्तदान करने से एक इन्सान दूसरे इन्सान की जान बचाता है। संत, महात्मा भी हमें यही प्रेरणा देते हैं कि हमें रक्त को दंगे फसाद, लड़ाई–झगड़े करके नालियों में नहीं बहाना बल्कि रक्तदान करके इन्सान की नलियों में पहुंचाना है।

सी –डैकियन श्री दलजीत सिंह जौली अपनी पत्नी के साथ 25वीं बार रक्तदान करते हुए

मैं खुद भी 1988 से लेकर आज तक नियमित रक्तदाता रहा हूँ और मैंने 25 बार से भी ज्यादा रक्तदान किया है। रक्तदान करने के पश्चात् मुझे ऐसा सुकून, खुशी और प्रसन्नता मिलती है जिसको मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकता। मेरे साथ मेरी बीवी और मेरे दोनों बेटे भी हर साल नियमित रूप से रक्तदान कर रहे हैं और मेरा अपना यह अनुभव है कि रक्तदान करने से किसी भी किस्म की कोई कमज़ोरी नहीं आती। एक यूनिट रक्त जो हम दान करते हैं वह मात्र 48 घण्टे में दोबारा शरीर में बन जाता है।

रक्तदान करने का कोई और विकल्प नहीं है और नियमित रक्त देने से हज़ारों बेशकीमती ज़िन्दगियाँ बचाई जा सकती हैं। यह एक ऐसा गुप्त दान है जिसमें एक रक्तदाता को यह नहीं पता होता कि उसका यह रक्त किसी हिन्दु, सिक्ख, मुस्लमान, ईसाई या किस इन्सान को जाएगा और उसके जीवन को बचाएगा। नियमित रूप से रक्तदान करने से शरीर चुस्त, फुर्तीला और स्वस्थ रहता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि शरीर का रक्त जब हम दान करते हैं तो जो नया रक्त शरीर में बनता है वो और स्वच्छ होता है।

अंत में मैं तो सबको यही अनुरोध करूँगा कि हमें नियमित रूप से रक्तदान करना चाहिए और दूसरों को भी रक्तदान करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

दलजीत सिंह जौली
प्रशासनिक अधिकारी, सी–डैक, मोहाली।

रक्त की एक बोतल ने मेरी जान बचाई, यह तुम्हारा था
मेरा बेटा घर वापस आ गया क्योंकि आपने खून दान किया
आपके खून दान के कारण मां वापस घर आ रही है

भारतीय महिला उद्यमशीलता

महिलायों की स्थिति :-

अगर देखा जायें तो दुनिया भर में महिला को सामाजिक, राजनैतिक, पेशावर और विशेष रूप से व्यक्तिगत विकास से वंचित रखा गया है। खास तौर पर भारतीय महिला की दशा लिंग भेद को लेकर और भी दयानीय है। परन्तु फिर भी हालांकि उद्यमी क्षेत्र में भारतीय महिला की दशा लिंग भेद को लेकर और भी दयनीय है। परन्तु फिर भी उद्यमी क्षेत्र में भारतीय महिला की भूमिका दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ज्यादातर महिलायें अभी भी असंगठित क्षेत्र जैसे की कृषि, डायरी, हस्तशिल्प, हथकरघा, कुटीर और निर्माण कार्य में कार्यरत है। भारतीय उद्यमी महिलायें ज्यादातर छोटे पैमाने के उद्यम चला रही है। इसका प्रमुख कारण सामाजिक राजनैतिक और विशेष रूप से पारिवारिक चुनोतियां हैं। अगर विश्व स्तर पर महिलायों की सम्पत्ति देखी जाये तो यह 2 प्रतिशत से भी कम है। ज्यादातर प्रमुख व्यवसायों पर पुरुष को ही प्रमुखता दी जाती है जिस कारण महिलाऐं उच्च स्तरीए व्यवसायों से वंचित रह जाती है। आमतौर पर महिलायें पुरूषों के मुकाबले 25 प्रतिशत कम वेतन पाती है, जबकि समान कार्य समान वेतन बराबर मजदूरी देने का कानून है। सूचना प्रौद्योगिकी युग की महिला उद्यमी इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी वातावरण में उद्यमी महिला केवल सलाई, कढ़ाई इत्यादि क्षेत्र तक ही सीमित नहीं बल्कि अब इस से निकल कर वह इंजीनियरिंग डिजाईन, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी एवं सेवा उद्योग में एक कामयाब उद्यमी के रूप में सामने आ रही है। इसी कारण वह सामाज में अपनी अर्थिक राजनैतिक, कुशल व्यवसयिक, तकनीकी प्रबन्धकीय एवं उद्यमशील विकास प्रति अपनी भूमिका बना चुकी है।

अब समय आ चुका है कि महिला के रचनात्मक एव उद्यमशील दृष्टिकोण को घर की चार दीवारी से बाहर निकालना होगा जो कि भारत के विकास के लिए एक सफल प्रयास होगा। भारत जैसे विकास शील देशों के लिए उद्यमी महिलाओं का आगे आना बहुत जरूरी है।

भारत सरकार की महिला उद्यमशील विकास में योगदान

वर्तमान युग में भारत सरकार महिला उद्यमी विकास को प्रोत्साहन दे रही है। लघु उद्योग विकास बैंक, लधु उद्योग सेवा संस्थान, विभिन्न वित्तीय संस्थाएँ एवं जिला उद्योग केन्द्रों द्वारा महिला उधमियों के विकास के लिए कई परियोजनाएं प्रदान की जा रही है। कई संस्थाओं द्वारा महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है तांकि आज के समाज में वह अपनी उद्यमी छवि को और व्यवसायिक बना सकें।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त तथ्यों एवं आकड़ों से यह बात स्पष्ट है की इन सूचना प्रौद्योगिकी युग में भारतीय महिला उद्यमशीलता के क्षेत्र में अपना कामयाब स्थान बना सकती है जो कि समूचे भारत के हित में होगा। सीडैक, मोहाली भी महिला उद्यमी विकास को लेकर कई सफलतापूर्वक कार्यक्रम कर चुका है और हम चाहते है कि एक भारतीय उद्यमी प्रेरित महिला के लिए आकाश ही उसकी सीमा है।

दीपक राणा
प्रशासनिक एवं हिन्दी अधिकारी

कर्म काण्ड रूहानी ज्ञान और श्री गुरू नानक देव

जब संसार अज्ञानता के अन्धकार में फंस जाता है और विषय विकारों की दास्ता में जकड़ जाता है तब संत महात्मा और पीर–पैगम्बर लोगों को इन बुराईयों से मुक्त करने के लिये प्रकट होतें है। गुरू नानक देव जी का संसार में उस समय जन्म हुआ जब यहां सच्चा धर्म लुप्त हो रहा था। क्या हिन्दू और क्या मुसलमान दोनों ही वर्ग कर्मकाण्ड, रीति–रिवाज और शरीयत को ही सच्चा धर्म समझने लगे थे। जनेऊ पहनना, मस्तक पर केसर का तिलक लगाना, बिना विचार या भाव के मशीन की तरह माला फेरे जाना और देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिये मनुष्यों और पशुओं की बली देने को धर्म कहा जाने लगा था। एक निराकार परमात्मा की सच्ची भक्ति का मार्ग अनेक छोटे बड़े इष्टों की पूजा और अराधना के जंगल में खो चुका था उस समय में श्री गुरुनानक देव जी का जन्म हुआ था। यह सब देखकर श्री गुरु नानक जी ने जोरदार शब्दों में मूर्ति–पूजा का खण्डन किया व समझाया कि मूर्ति पूजा का कोई परमार्थी लाभ नहीं है बल्कि चेतन जीव का जड़ पत्थरों की पूजा करना, आत्मा को ऊँचा उठाने की बजाये नीचे गिराने वाला कर्म है। गुरू साहब ने बड़े ही सुन्दर तरीके से समझाया कि हे पांडे तूने अपने घर में इष्ट और अनेक देवताओं की सभा –मूर्तियों के रूप में सजाई हुई है। तू अज्ञानता वश इनको सच्चे देवता समझ कर स्नान कराता है, धूप, केसर आदि चढ़ाता है और झुक–झुक कर इनके आगे माथा रगड़ता है। यह सब कुछ करने के बावजूद तुझे रोटी कपड़े के लिये दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ते हैं। ये पत्थर के ठाकुर न तो तुझे भूख से छुड़ा सकते हैं और न ही मौत से बचा सकते हैं।

इसी प्रकार से उस समय के जैन और बौद्ध भिक्षू भी रूहानी गिरावट के दोष से पूरी तरह मुक्त नहीं थे। उस समय के करीब–करीब सभी धर्म अन्ध विश्वास, ढोंग, कपट और दिखावे का रूप धारण कर चुके थे। वास्तव में लोग असली धर्म की गिरी को खो चुके थे और उसके छिलके से ही संतुष्ट हो रहे थे।

श्री गुरु नानक जी उन महान सन्तों की परम्परा में से थे जिन्होंने परमपिता परमेशवर के साक्षात निजी अनुभव को ही सच्चे धर्म का सार माना है। गुरू साहिब ने अपने समय के धर्मो में प्रचलित जाति–पाति, देश कौम आदि के छोटे बड़े सभी बंधनों को तोड़ा और खण्डन किया। गुरू नानक जी मानव को अन्धविश्वास, हठ धर्मिता और सर्कीणता के जाल से मुक्त करने के लिये आए थे। उन्होंने प्रचलित विश्वासों को केवल बुद्धी और तर्क की कसौटी पर परखने का ही उपदेश नहीं दिया क्योंकि इस से जीव के सन्देह और संशय की अन्धेरी गली में खो जाने का खतरा होता है। उन्होंने विवेक और तर्क के साथ–साथ एक आशा तथा आनन्द का सन्देश भी दिया जो कि अज्ञानता, अविश्वास और निराशा के चारों और फैले हुऐ अन्धकार और उदासी को खत्म करने में समर्थ था।

रूहानी ज्ञान :- श्री गुरू नानक देव के उपदेश का मूल तत्त्व और वास्तविक केन्द्र यह विचार है कि मनुष्य अपने अन्दर ही परमात्मा के दर्शन कर सकता है। यह निजी अनुभव सभी प्रयत्नों और इच्छाओं की पूर्ति या मंजिल है। इससे मनुष्य समय व स्थान की कैद और इनके साथ जुड़ी हुई सब कमजोरियों और कमियों से ऊपर उठ जाता है। एक ओर तो इससे मनुष्य जन्म मरण और सुख–दुख के चक्र से आजाद हो जाता है तथा दूसरी तरफ इस अवस्था की प्राप्ति से मनुष्य अमर आनन्द, अनन्तः सुन्दरता और अमर शान्ति का भागीदार बन जाता है। यह अवस्था समय हीनता अथवा अनन्त्ता की सूचक है इसलिये यह आदि–अन्त, उतार चढ़ाव और घट–बढ़ के नियमों से भी मुक्त है। समय से मुक्त होने के कारण यह अवस्था कारण और कार्य या कर्म और फल से भी ऊपर है क्योंकि कारण और कार्य या कर्म और फल का सम्बन्ध भी समय से जुड़ा हुआ है। कर्म और फल का वास्तविक अर्थ ही यह है कि एक समय में किया गया कर्म, समय पाकर फल देता है परन्तु जो जीव समय की सीमा से उठ जाता है वह अपने आप ही कर्म और फल की सीमा से भी ऊपर उठ जाता है।

सन्तों ने कहा है कि परमात्मा को अन्दर प्राप्त कर लेने के इस निजि अनुभव को ही धर्मिक अनुभव या रहस्यवादी अनुभव की संज्ञा दी गई है। यह अवस्था न खयाली है न ही बनावटी न इस का मनोविज्ञान से कोई सम्बन्ध है न पराशरीरिक शक्तियों से न यह बुद्धि के दायरे की वस्तु है न तर्क के। यह भाव और विचार से परे और पार की ऐसी अकथ–कथा है जिसका न कोई भाषा वर्णण कर सकती है और न ही जिसका बाहरी जगत की किसी वस्तु या आवस्था से मुकाबला किया जा सकता है। यह ऐसी अवस्था है जिसमें सारी सृष्टि की अनेकता के पीछे विचर रही एक ऐसी मूल एकता का जीता जागता अनुभव हो जाता है जो मन इन्द्रियों तर्क और बुद्धि से परे की वस्तु है।

गुरू नानक देव जी कहते है कि वह खुद ही बर्तन है, खुद ही कुम्हार है और खुद ही बर्तन की मिट्टी है । वास्तव में ऐसी पूर्ण एकता की अवस्था है कि इसमें देखने वाला और दृश्य साधक और साध्य या पुजारी और इष्ट का द्वैत समाप्त हो जाता है। इस अवस्था में परम आनन्द की प्राप्ति आश्चर्यमय सुन्दरता और अदभुत शान्ति का अनुभव होता है। सभी पूर्ण सन्तों की वाणी इस का संकेत देती है। इस अनुपम अवस्था में जीव दृश्यमान जगत की अनेकता मे सिमट कर अदृश्यमान परम–सत्य की पूर्ण एकता में समा जाता है। परम सत्य की प्राप्ति के अर्पूव आनन्द में लीन होकर उसका रूप हो जाना ही रहस्यमय रूहानी अनुभव का वास्तविक सार है ।

आगे गुरू नानक साहब कहते है कि रूहानियत का यह अलौकिक आनन्द इन्द्रियों का विषय नहीं है। यह इन्द्रियों के सीमित सुख दुःख से अलग और आदि अन्त से परे और ऊपर है। यह ऐसा अजर, अमर और अथाह अनुभव है जो समय व स्थान से उत्पन्न परिवर्तनों से स्वतन्त्र है। इस अवस्था में पहुँच कर जन्म–मरण और आवागमन के हर प्रकार के बन्धन खत्म हो जाते हैं, गुरु साहब कहते हैं कि कोई बिरला सौभागय– शाली जीव ही पूरे गुरू के मत पर चलकर इस अवस्था तक पहुँचता है। इस अवस्था में पहुँच कर ही साधक

पहुँचता है। इस अवस्था में पहुँच कर ही साधक को सच्चे जीवन की प्राप्ति का आभास होता है। उसको पता चलता है कि मन इन्द्रियों के जगत और समय व स्थान के संसार का असल में अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। यह किसी अदृष्ट असलियत की परछाई और माया का छलावा मात्र है। जो लोग सतगुरू के बताए हुये मार्ग पर चलकर उस निश्चल अवस्था को प्राप्त कर लेते है वे माया की ढलती हुई परछाई और छलमय प्रसार से सदा के लिये मुक्त हो जाते हैं।

इस अवस्था की प्राप्ति का मार्ग बहुत कठिन है। कई दार्शनिकों और महात्माओं ने इसको तलवार की धार जैसा मार्ग कहा है। परन्तु जब मंजिल पर पहुँच जाते हैं तो फल भी अमूल्य मिलता है और जितनी मुसीबतें उठानी पड़ती है उनका पूरा मुआवजा मिल जाता है। गुरू साहब ने कहा है कि इस अवस्था को पाकर मन के सभी विकार और बन्धन दूर हो जाते है तथा आत्मा निर्मल और पवित्र हो जाती है। जैसे कि ऊपर कहा गया है कि सत्य की प्राप्ति जीव को अपने अन्दर ही होती है और इस अन्तर्मुख अनुभव की प्राप्ति ही सच्चे धर्म या सच्ची रूहानियत का असली सार है। आगे गुरू साहब कहते हैं कि जब शरीर के नौ द्वार बन्द करके दसवें दरवाजें दाखिल हो जाते हैं तो इन्द्रियों के भोग फीके लगने लगते हैं और अन्दर ऐसे आन्नददायक अमृत की प्राप्ति हो जाती है। जिसको पाकर मन और आत्मा सदा के लिये शान्त हो जाते हैं।

मोहन लाल रंगा
वरिष्ठ वित्त अधिकारी

किसी ने पूछा तेरा घरबार कितना है
किसी ने पूछा तेरा कारोबार कितना है
किसी ने पूछा तेरा परिवार कितना है
कोई विरला ही पूछता है
तेरा गुरू नाल प्यार कितना है

जीवनोपयोगी अनमोल बातें

अध्ययन, विचार, मनन, विश्वास एवं आचरण द्वार में से किसी एक को मजबूती से पकड़ लिया तो अभीष्ट उद्धेश्य को प्राप्त करना बहुत सरल हो जाता है। सच्ची लगन तथा निर्मल उद्धेश्य से किया हुआ प्रयत्न कभी निष्फल नहीं जाता। खरे बनिए, खरा काम कीजिए और खरी बातें कहिए । इससे आपका हृदय हल्का रहेगा । अच्छाईयों का एक एक तिनका चुन चुनकर जीवन भवन का निर्माण होता है परन्तु बुराई का एक हल्का झोंका ही उसे मिटा डालने के लिए पर्याप्त होता है। स्वार्थ, अहंकार एवं लापरवाही की मात्रा बढ़ जाना ही किसी व्यक्ति के पतन का कारण होता है। बुद्धिमान वह होता है जो किसी को गलतियों से हानि होते देखकर अपनी गलतियां सुधार लेता है। भूत लौटने वाला नहीं, भविष्य निश्चित नहीं। संभालने एवं बनाने योग्य तो वर्तमान ही है इसलिए सदैव वर्तमान में रहकर निरन्तर कार्य करते रहो । दूसरों की निंदा करने एवं त्रुटियों को सुनने में अपना समय नष्ट मत करो । दूसरों की निन्दा करके कभी किसी को कुछ नहीं मिला, जिसने अपने को सुधारा उसने बहुत कुछ पाया । यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ सिखा देती है। दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं । दूसरों को पीड़ा न देना ही मानव धर्म है। जो तुम दूसरों से चाहते हो उसे पहले स्वयं करो। दूसरों के साथ सदैव नम्रता, मधुरता, सज्जनता, उदारता एवं सहृदयता का व्यवहार करें । सज्जनता और मधुर व्यवहार मनुष्यता की पहली शर्त है। विचारों की पवित्रता स्वयं स्वास्थ्यवर्धक रसायन है। आत्म निरीक्षण इस संसार का सबसे कठिन किन्तु करने योग्य कर्म है। आत्म निरीक्षण का ही दूसरा नाम भाग्य निर्माण है। महानता के विकास में अहंकार सबसे घातक शत्रु है। जिसने शिष्टता और नम्रता नहीं सीखी उनका बहुत सीखना भी व्यर्थ रहा ।

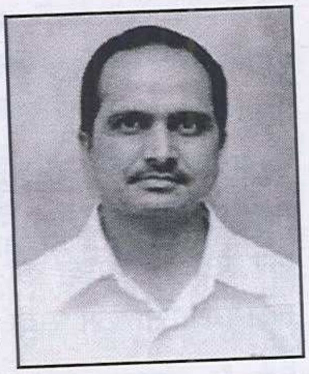

राज कुमार
सहायक

"पत्नी की आरती"

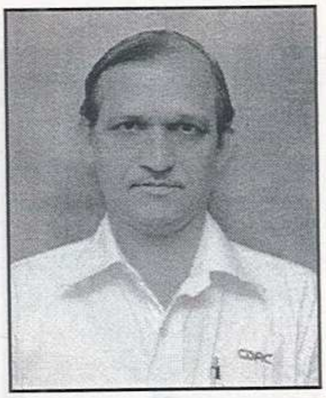

जय हो, जय हो पत्नी रानी, करती हो तुम मनमानी ।
बात हमारी हरदम टारती, हो रानी हम तो उतारें तेरी आरती ।।

तुम समान अलशाली कोई जग में नहीं दूजा ।
हम तो हैं बलहीन तुम्हारी करें किस तरह पूजा ।।

हमसे खाना बनवाने वाली, बर्तन मंजवाने वाली ।
नौकर सा हमको दुत्कारती, हो रानी, हम तो उतारे तेरी आरती ।।

तुम बच्चो की अम्मा प्यारी, सांस की बिटिया प्यारी ।
कभी अगर तुम रूठो, कर दो खटिया खड़ी हमारी ।।

हमको अकसर हडकाने वाली, आंखे दिखाने वाली ।
गुस्सा तुम हम पर उतारती, हो रानी हम तो उतारें तेरी आरती ।।

धूप–दीप कुछ तुम्हें ना सोहे अगर–कपूर बाती ।
क्रीम–पाउडर लाली लखि लखि तुम काफी हर्षाती ।।

यूं तो लगती हो भोली–भाली लेकिन हो एक दुनाली ।
बोली की गोली हरदम मारती, हो रानी, हम तो उतारे तेरी आरती ।।

पति–पत्नी का इस जग में है यही पुराना नाता ।
बैठी–बैठी खाती पत्नी, पति दिन–रात कमाता ।

निश दिन मौज उड़ाने वाली, हमको तरसाने वाली
सारी कमाई तुम डकारती, हो रानी, हम तो उतारे तेरी आरती ।।

ये सारी धन दौलत तेरी, तेरा चांदी सोना ।
हम तो केवल इतना चाहें तू नाराज ना होना ।।

हम को उल्लू बनाने वाली, घर की है लक्ष्मी आली
सेवक को काहे फटकारती, हो रानी हम तो उतारे तेरी आरती ।।

एस.के. गोस्वामी
एच.आर.डी.कार्यकारी

व्यंग्यात्मक काव्य–असमानता के मंडराते बादल

किस्से किसे सुनाऊँ ?
हाल–ए–दिल किसको बताऊँ ?
किताबों में ही उलझा रह गया,
ये असमानता का भेद कैसे मिटाऊँ ?

हिस्से में है कितना, कैसे दिखाऊँ ?
तड़फते दिल को मैं, कैसे समझाऊँ ?
थोड़ा सा है मलहम और जख्म है कितने,
किस तरह मैं इनको मिटाऊँ ?

कहता है जमाना कि मैं हंस के दिखाऊँ,
पर दामन से बदनसीबी मैं कैसे छुड़ाऊँ ?
इक दूसरे को हलाल करने को हैं आतुर,
झगड़े ये किस तरह मैं मिटाऊँ ?

किसने क्या किया कैसे मैं समझाऊँ ?
कितना हुआ इजाफा कैसे मैं बताऊँ ?
तेरी किस्मत में है आँसू ए 'रवि',
किस तरह मैं इनको पलकों में छुपाऊँ ?

रविंदर सिंह
कार्यालय सहायक

ज़रा हंस ले

एक बूढ़ी औरत फिल्म देखने गई वो कभी 15 मिनट में कभी 20 मिनट में कोल्ड ड्रिंक की कैन में मुंह लगाती और फिर कैन वहीं रख देती । पास बैठा लड़का यह देखकर परेशान हो गया, उसने कैन उठाई और एक बार में ही खाली कर दी और बोला–ऐसे पी जाती है कोल्ड ड्रिंक आंटी जी ।
बुढ़िया– लेकिन बेटा तुमसे किसने कहा कि कैन में कोल्ड ड्रिंक थी, मैं तो उसमें पान थूक रही थी ।

एक मोटी औरत डॉक्टर के पास गई और ओली –डॉक्टर आपने तो कहा था कि गेम्स खेलेन से मोटापा कम होता है पर मेरा तो बिल्कुल कम नहीं हुआ ।
डॉक्टर –कौन सा खेल खेलती हो? मोटी औरत–चिड़िया उड़, तोता उड़..
एक शराबी ने अपने दोस्त को बड़े उदास स्वर में बताया–मेरी बीवी ने मुझे नोटिस दिया है कि अगर मैंनं शराब पीनी नहीं छोडत्री तो वह मुझे छोड़कर चली जायेगी । ये तो सचमुच बहुत अफसोस की बात है दोस्त ने हमदर्दी जताते हुये कहा। शराबी–हां भली औरत है बहुत याद आया करेगी उसकी ।

अध्यापिका छात्रा से – मोटर साइकिल के कितने टायर होते हैं? छात्रा (अध्यापिका से) 6 टायर। अध्यापिका –कैसे ? छात्रा– 4 मोटर के 2 साइकिल के !

चींटी ऑटो में बैठी और एक पैर बाहर रखा । ऑटो ड्राइवर–मैडम पैर अंदर कर लो । चींटी–नहीं, रास्ते में हाथी मिले तो लात मारनी है, कल साला आंख मार के गया था।

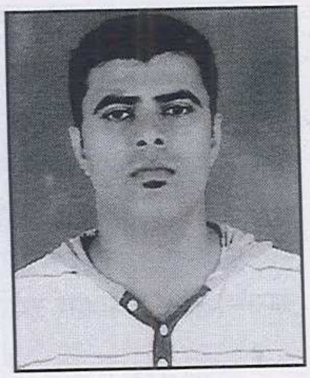

भिखारी–ऐ भाई 1 रूपया देदे, 3 दिन से भूखा हूँ । मनोज–3 दिन से भूखा है तो 1 रूपए का क्या करेगा? भिखारी वजन तोलूंगा कितना घटा है!!

मालिक (आलसी नौकर से) यहां पर इतने सारे मच्छर गुनगनु कर रहें है, तू उन्हे मार गिरा। थोड़ी देर बाद मालिक– अबे साले नौकर के बच्चे मैंनें तुझे मछर मारने को कहा अभी तक तूने मारे नही। वो अब भी गुन–'गुन कर रहे हैं। आलसी नौकर–मालिक मच्छर तो मैंने मार दिए थे। यह तो उनकी बीवियाँ है जो विध्वा होकर रो रही है।

डॉक्टर ने एक पागल से पूछा–तुम छत से क्यों लटक रहे हो?
पागल –मैं एक बल्ब हूँ ।
डॉक्टर–तुम जल क्यों नहीं रहे?
पागल– बेवकूफ ये इंडिया है, लाइट गयी हुई है।
मुकेश डॉक्टर साहब मुझे एम समस्या है?

डॉक्टर – क्या ? मुकेश – बात करते वक्त आदमी दिखाई नहीं देता । डॉक्टर–ऐसा कब होता है? मुकेश–फोन करते वक्त !!

मरीज (डॉक्टर से) मैं एक महीने से रोज 50 रूपये की दवा ले रहा हूँ पर कोई फायदा नहीं हुआ । डॉक्टर –कोई बात नहीं कल से मैं तुम्हें 40 रूपये की दवा दूँगा 10 रूपये का फायदा होगा।

संजीव कुमार
अभियंता

सुबह की सैर

विष्णु पुराण में इस बात का उल्लेख है कि जो व्यक्ति सुर्योदय होने पर भी सोया रहता है वह पाप का भागी बनता है। यहां तक कि रामायण में भरत जी ने माता कौशल्या को यह बात इस रूप में कही है–यदि राम को बनवास भेजने में मेरा हाथ है तो मुझे यह पाप लगेगा जो सुर्योदय के पश्चात् सोकर उठने से लगता है।

हमारे पुर्वजनों ने सुर्योदय से पूर्व सोकर उठने के महत्व और उसकी आवश्यकता को स्पष्ट रूप से रेखाकिंत किया है । शास्त्रों में प्रातःकाल को अमृतवेला भी कहा है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नित्य आसन, व्यायाम करने को कहा गया है। यहां तक की एक पत्रिका का 'मेंटल हेल्थ एण्ड फिजीकल एक्टीविटी' में प्रकाशित एक रिसर्च के मुताबिक अवसाद कम करने में सुबह की सैर की अहम भूमिका है। अतः प्रातः प्रतिदन लगभग 30 मिनट तक भ्रमण करना चाहिए। प्रातः जल्दी उठकर भ्रमण करने के अनेक लाभ होते है।

1) शरीर की 650 मांसपेशियों में स्फूर्ति आती है।

2) गम्भीर बिमारियों के होने के अवसर लगभग 30–40 प्रतिशत कम हो जाता है।

3) मधुमेह के रोगियों के लिए प्रातः भ्रमण बहुत उपयोगी है।

4) हृदयरोगियों के लिए सुबह की सैर जीवनदान की तरह है। प्रातः कालीन सैर एक टॉनिक का काम करता है। इससे शारीरिक व बौद्दिक शांन्ति में वृद्दि होती है।

5) सुर्योदय के समय भ्रमण से आप उगते हुए सूरज के दर्शन कर सकते हैं जिससे आँखों को बहुत लाभ पहुँचता है।

6) प्रातः काल की गतिशील सैर मांसपेशियाँ मजबूत होती है।

7)नियमित सैर करने से न केवल मांसपेशियाँ मजबूत होती है, बल्कि बाजुओं, पेट एवं जाँघो में भी ताकत आती है।

8)अतिरिक्त चर्बी कम होती है। जितनी अधिक सेर करेंगे उतनी ही अधिक कैलोरीज बर्न होगी एवं मोटापा कम होगा।

स्टर्लिग विश्वविधालय के शोधकर्ताओं ने इसके लिए 341 रोगियों पर व्यायाम और सैर का असर देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि सैर का भी कड़े व्यायाम जैसा असर होता है।

अतः हमें प्रातः नियमित सैर करनी चाहिए ।

नवरूप कोहली
परियोजना सहायक

पर्यावरण

कभी किसी नई और अच्छी बात को समझने के लिए एकाध कठिन शब्द भी जान लेने में मजा आता है ''पर्यावरण'' एक ऐसा ही शब्द है। हमारे बिल्कुल आस–पास और खूब दूर–दूर जो कुछ भी है उसका बहुत सा भाग बहुत सी चीजें इसी शब्द में समा जायेगी। मिट्टी, पानी, हवा, नदी, पहाड़, पेड़, पौधे, जंगल में रहने वाले पशु–पक्षी, गाँव, शहर में रहने वाले हम सब पर्यावरण जैसे छोटे से शब्द में आ जाते हैं।

हम चारों तरफ फैले पर्यावरण का एक बिल्कुल छोटा सा भाग है। पर छोटा सा हिस्सा होते हुए भी हमने इस पर्यावरण को बिगाड़ना शुरू कर दिया है। बिगड़ते पर्यावरण का हम पर भी बहुत असर होता है। शहरों के कारखानों का गंदा पानी छोटी बड़ी सब नदियों में मिल रहा है और उन्हें बर्बाद कर रहा है। हमें पेड़ों की कटाई को रोकना पड़ेगा। पेड़ों से ही हमें शुद्ध हवा मिलती है। पर्यावरण शुद्ध होगा तो हमारा स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

हिंदू लोग गंगा को पूजते हैं, उसमें स्नान करके अपने पापों को धोते हैं। लेकिन इंसान ने उस 'गंगा' माँ को भी गंदा करने में

तनिक मात्र भी चूके नहीं है। पर्यावरण को साफ करने के लिए अगर हम सब एक जुट होकर कदम उठायेंगे, तो ही हम एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेंगे। जहाँ लोग गंदगी में रहते हैं हमे उन्हे सफाई के बारे में बताना होगा। शुरूआत हमें अपने घर से करनी होगी। हमें अपने घर के आस–पास पौधे लगाने होंगे। तभी हम एक घर, एक शहर, एक गाँव, और एक स्वस्थ भारत का निर्माण कर सकते हैं।

'' पेड़ लगाओ जन जीवन बचाओ''

दीदार सिंह
एम.एम.एस–IV (एइलैक्ट्रीशन)

पुस्तकालय का महत्व

पुस्तकालय (Library) वह स्थान है जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, स्रोतों, सेवाओं आदि का संग्रह रहता है । आज हर किसी को विभिन्न प्रकार की सूचना की आवश्यकता होती है । छात्रा को पढ़ाई के लिये, अनुसंधानकर्ता (Researcher) को अनुसंधान करने के लिये और वकील को वकालत करने के लिये सूचना की आवश्यकता होती है। आज एक आम आदमी जो कि मंहगी पुस्तकें खरीद कर पढ़ नहीं सकता परंतु उसे भी सूचना की आवश्यकता होती है ये सभी लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिये सिर्फ एक ऐसा स्थान है जहाँ वह अपनी–अपनी सूचना को प्राप्त कर सकते हैं, वह स्थान है पुस्तकालय ।

पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जहां पर बैठ कर आप शाँतिपूर्वक अपनी पसंद की पुस्तकें पढ़ सकते हो। बच्चों को जब स्कूलों में छुट्टियां होती है तो वे पुस्तकालय में जाना बहुत पंसद करते है क्योंकि वहां पर वे विभिन्न प्रकार की पुस्तकें जैसे कॉमिक्स, हैरी पॉटर, चंपक, मनोरंजन की पुस्तकें इत्यादि पढ़ सकते है। आज हर पुस्तकालय में बच्चों का अनुभाग (Children Section) होता है, जहां बच्चे जाना बहुत पसंद करते हैं। बच्चों के इलावा बुर्जुग लोग, जो कि सेवा निवृत हो जाते है वे भी पुस्तकालय में जाना बहुत पसंद करते हैं क्योंकि उनको इस आयु में शाँतिपूर्वक स्थान की आवश्यकता होती है। पुस्तकालय में वे आराम से बैठ कर अपने पसंद के अखबार, पुस्तके पत्रिका इत्यादि का आनंद उठाते है। आज आम गृहिणी (Housewife) भी पुस्तकालय से जुड़ी होती है क्योंकि वहां से वह खाना पकाने, आहार, आंतरिक सज्जा इत्यादि से संबधित पुस्तकें प्राप्त कर के उन को अपने जीवन में अमल में लाती है।

आज चाहे इंटरनेट (Internet) के जरिए हम घर बैठ कर विभिन्न प्रकार की जानकारी को प्राप्त कर सकते है, किसी भी पुस्तक को डाउनलोड किया जा सकता है, कोई भी पत्रिका, अखबार को इंटरनेट के जरिये प्राप्त कर सकते है, कोई भी ऐसी सूचना नहीं जो हम इंटरनेट से प्राप्त नहीं कर सकते । आज चाहे हम इंटरनेट के जरिये कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते है, परन्तु फिर भी पुस्तकालय का स्थान इंटरनेट कभी भी नहीं ले सकता क्योंकि आज भी कितना ऐसा ज्ञान का भंडार पुस्तकालय में भरा पढ़ा है, जिनको आप इंटरनेट के जरिये प्राप्त नहीं सकते, उसके लिये आप को पुस्तकालय में ही जाना पड़ेगा। पुराने समय में लोग विभिन्न प्रकार के पत्तों, पत्थरों इत्यादि पर लिखा करते थे, जिनको समय समय पर लोगों ने संभाल कर रखा है, जो आज भी उपलब्ध है, वो सब आप इंटरनेट से प्राप्त नहीं कर सकते ।

अंत में हम कह सकते है कि दुनिया में इलेक्ट्रोनिक संसधान चाहे कितने मजबूत हो जाए पुस्ताकालयों का महत्व न कभी घटा है और न कभी घटेगा।

बलबीर कौर
विभाग–पुस्तकालय

नौजवान पीढ़ी में नशे की प्रवृति

आजकल नौजवानों में नशा करना एक आम सी बात होती जा रही है, खासकर कालेजों व विश्वविद्यालयों में। एक तरह से यह एक फैशन ही बनता जा रहा है । घर में मां–बाप अपने बच्चों को ज्ञान अर्जित करने के लिए भेजते हैं, परन्तु नशे के कुँए में गिरकर नौजवान युवक व युवतियां अपना भविष्य अंधकार में झोंक देते हैं। साथ ही वह अपना मानसिक व शारीरिक संतुलन भी खो बैठते हैं। ?

इस बुरी आदत के कई कारण हैं। नशे की चीजों को आसानी से उपलब्ध होना, बेरोजगारी, परिवारिक कारण व कुसंगित आदि। मां–बाप व समाज की उम्मीदों पर खरा न उतरना भी नशे करने का ही एक कारण है।

नशे की लत एक सामाजिक समस्या बनती जा रही है। इस कारण नौजवान चोरियां, छीना–झपटी आदि करते हैं। इस समस्या का समाधान सामाजिक कार्यकर्तो, मां–बाप, अध्ययापक, मीडिया सबको मिलकर करना होगा। इससे उभरने का रास्ता आसान या छोटा नहीं है। हर नौजवान खराब नहीं है परन्तु हम उनकी मुशकिलें समझने का प्रयास नहीं करते । इसके लिए हमें अपनी शिक्षाप्रणाली को ऐसा बनाना होगा कि नौजवानों को निर्माण कार्यों में लगाया जा सके । उनके अन्दर आशा व विश्वास की किरण जगाई जाये, फिर उनको इस बुरी लत से दूर करना मुशकिल काम न होगा।

नशा बेचने वालों को कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए तांकि कोई दूसरा व्यक्ति यह सब करने की हिम्मत न जुटा सके ।

सुरेश जंबागी
तकनीकी सहायक

प्रशासन शब्दावली

Oath of office	पद शपथ
Oath of secrecy	गोपनीयता–शपथ
Occupation	व्यवसाय, धंधा
Off duty	काम पर न होना
Occupancy Certificate	अधिभोग अधिकार
Offer of appointment	नियुक्ति प्रस्ताव
Office copy	कार्यालय
Official	शासकीय, सरकारी
Official Correspondence	सरकारी पत्रव्यवहार
On account grant	हिसाबी अनुदान
On special duty	विशेष ड्यूटी
Opening Balance	रोकड़ जमा
Open Tender	खुला टेंडर
Organization chart	संगठन, व्यवस्था चार्ट
Organization documents	मूल दस्तावेज
Packing and marking	पैक करना और चिहन लगाना
Paper Work	खुला टेंडर
Parliamentary Committee	संसदीय समिति
Participate	भाग लेना, सम्मिलित होना
Particulars	ब्योरा, विवरण
Part time	अंशकालिक
Pay roll	वेतन पत्राक
Pension	पेंशन
Performance audit	निष्पादन लेखापरीक्षा
Permanent Post	स्थायी पद
Physical Vacancy	वास्तविक रिक्ति
Potage Stamp	डाक–व्यय
Post-dated cheque	उतर दिनांकित चैक
Pre-audit	पूर्व–लेखापरीक्षा
Preparation Leave	तैयारी के लिए छूट्टी
Pre-audit	पूर्व–लेखापरीक्षा
Preparation Leave	तैयारी के लिए छूट्टी

सुषमा कौशल
कार्यालय सहायक

सी डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
A Scientific Society of the Ministry of Communications and Information Technology, Government of India
A-34, Industrial Area, Phase-VIII, Mohali - 160071, (Near Chandigarh) Punjab. INDIA.
Phone: +91-172-2237052-57, +91-172-6619000 Fax: +91-172-2237050-51
Website: www.cdacmohali.in